राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालय: कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगरम्

षण्मासससत्राधारितसंस्कृतस्य परास्नातकपाठ्यक्रम:

PG Sanskrit (NEP-CBCS)

Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020

पाठ्यक्रम समिति की बैठक (दिनांक 19.09.2026) द्वारा संशोधित



Department of Sanskrit

Siddharth University, Kapilvastu

Siddharthnagar, Uttar Pradesh, India- 272202

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु,

षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

पाठ्यक्रमपरिचयः

परास्नातक संस्कृत का यह पाठ्यक्रम चॉइस बेस्ड क्रेडिट सिस्टम CBCS प्रोग्राम है |
यह पाठ्यक्रम 2 वर्षीय और 4 सेमेस्टर का होगा, जिसमे कुल १०० क्रेडिट होंगे।

छात्र को **प्रथम सेमेस्टर** में 4 अनिवार्य पाठ्यक्रम २० क्रेडिट(प्रत्येक ५ क्रेडिट) एवं अन्य संकाय का एक लघु पाठ्यक्रम ४ क्रेडिट का पढ़ना होगा तथा एक **शोध परियोजना** करनी होगी जिसके ४ क्रेडिट होंगे इस प्रकार प्रथम सेमेस्टर कुल २८ क्रेडिट का होगा ।

द्वितीय सेमेस्टर में ४ अनिवार्य पाठ्यक्रम २० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) तथा एक **शोध परियोजना** ४ क्रेडिट की करनी होगी। इस प्रकार द्वितीय सेमेस्टर कुल २४ क्रेडिट का होगा ।

तृतीय एवं चतुर्थ के प्रत्येक सेमेस्टर में -

२ अनिवार्य पाठ्यक्रम १० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) और २ ऐच्छिक पाठ्यक्रम १० क्रेडिट (प्रत्येक ५ क्रेडिट) तथा एक **शोध परियोजना** करनी होगी जो ४ क्रेडिट की होगी | प्रत्येक सेमेस्टर ऐच्छिक पाठ्यक्रम A (वेद), B (व्याकरण), C (साहित्य) और D (दर्शन) वर्ग में विभक्त होगा। यदि कोई छात्र प्रथम ऐच्छिक पाठ्यक्रम के किसी एक वर्ग का चयन करता है तो द्वितीय ऐच्छिक पाठ्यक्रम में भी उसे उसी वर्ग का ही चयन करना होगा, जिसके आधार पर उपाधि की विशेषज्ञता प्रदान की जाएगी।

उदाहरणार्थ - यदि कोई छात्र प्रथम ऐच्छिक पाठ्यक्रम के A वर्ग का चयन करता है तो द्वितीय ऐच्छिक पाठ्यक्रम में भी उसे A वर्ग का ही चयन करना होगा |

इस प्रकार तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर २४+२४= कुल ४८ क्रेडिट के होंगे |

नोट: प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर के प्रत्येक प्रश्नपत्र ७५ अंक लिखित और २५ अंक आंतरिक मूल्यांकन =१०० अंक के होंगे |

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु,

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

Course Introduction

The course of Masters Sanskrit is semester system credit based CBCS program. This course will be of 2 years and 4 semesters with a total of 100 credits.
The student will have to study 4 compulsory courses of 20 credits (5 credits each) in the first semester and a Minor course of 4 credits in other disciplines and undertake a research project of 4 credits, thus the first semester will be 28 credits in total.

The second semester will consist of 4 compulsory courses of 20 credits (5 credits each) and a research project of 4 credits, thus the second semester will be of 24 credits.

In each of the third and fourth semesters -
2 compulsory courses of 10 credits (5 credits each) and 2 elective courses of 10 credits (5 credits each) and a research project of 4 credits each. Each semester elective courses will be divided into classes A (Veda), B (Vyakarana), C (Sahitya) and D (Darshana).
If a student chooses any one section of the first elective course, then in the second elective course also he will have to choose the same class.
For example - If a student chooses A class of first elective course then he will have to choose A class in second elective course also.
Thus third and fourth semester will be 24+24= total 48 credits.

Note: Each paper of 1st, 2nd, 3rd and 4th semester will be of 75 marks written and 25 marks internal assessment = 100 marks.

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

प्रथमषण्मासिकसत्रम~ (First Semester)

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 401	संहिताभाष्यभूमिका च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य एवं संहिता का व्यापक परिचय देना है। इस पाठ्यक्रम में ऋग्वेद एवं ऋग्वेद भाष्य भूमिका के कुछ महत्वपूर्ण स्तोत्र तथा महत्वपूर्ण संवाद सूक्त शामिल हैं, जिसके माध्यम से छात्र प्राचीन भारतीय वैदिक संस्कृति को समझ सकेंगे|

अधिगम: (Learning / Outcome):

पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद छात्र-

- को कुछ वैदिक देवताओं की प्रकृति क्रिया और प्रतिनिधित्व के बारे में पता चल जाएगा|
- वैदिक भजनों के अर्थ की व्याख्या करने में सक्षम होंगे, प्राचीन और आधुनिक टीकाकारों की कुछ प्रसिद्ध टिप्पणियों के अनुसार वैदिक मंत्रों को उनके वास्तविक रूप में पढ़ने का प्रयास करेंगे|

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यानसंख्या	क्रेडिट - संख्या
प्रथमो वर्ग:	ऋग्वेद:- वरुणसूक्तम् (१.२५), सवितृसूक्तम् (१.३५), सूर्यसूक्तम् (१.१५१)	15	1
द्वितीयो वर्ग:	ऋग्वेद: - उसस्~-सूक्तम् (३.६१) पर्जन्यसूक्तम् (५.८३) वाक्सूक्तम् (१०.१२५)	15	1
तृतीयो वर्ग:	विश्वामित्रनदीसंवादसूक्तम्(३.३३), यम-यमी-संवादसूक्तम् (१०.१०)	15	1
चतुर्थो वर्ग:	सरमा-पणिसंवादसूक्तम् (१०.१०८), पुरुरवा-उर्वशीसंवादसूक्तम्	15	1
पञ्चमो वर्ग:	ऋग्वेदभाष्यभूमिका - वेदापौरुषेयत्वसिद्धिपर्यन्तम्	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. ऋक्सुक्तसङ्ग्रहः –	डॉ. हरिदत्त शास्त्री
२. वैदिक सूक्त संग्रह -	गीता प्रेस गोरखपुर
३. वेदचयनम्-	विश्वम्भरनाथ त्रिपाठी
४. ऋग्वेद संहिता -	पं. दामोदरपतद सातवलेकर
५. वेदामृतमञ्जूषिका -	डॉ. प्रयागनरायण मिश्र
६. वैदिक व्याकरण –	डॉ. रामगोपाल
७. वैदिक साहित्य और संस्कृति –	प्रो. बलदेव उपाध्याय
८. वैदिक साहित्य और संस्कृति –	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
९. वैदिक साहित्य का इतिहास -	डॉ. रघुवीर वेदान्तकर
१०.वैदिक साहित्य और संस्कृति का वृहद् इतिहास –	प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 402	व्याकरणभाषाविज्ञानञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

यह पाठ्यक्रम छात्रों को दर्शन एवं आधुनिक भाषाविज्ञान की कुछ महत्वपूर्ण अवधारणा एवं सिद्धान्तों का साक्षात्कार कराता है और उनके प्रकाश में संस्कृत भाषा को देखने और उसका विश्लेषण करने में उनकी मदद करता है | पाठ्यक्रम शिक्षार्थी को संस्कृत ध्वन्यात्मकता, आकृति विज्ञान, वाक्य रचना और शब्दार्थ से परिचित कराएगा। यह पाठ्यक्रम छात्रों को अष्टाध्यायी यानी महाभाष्य की कुछ बहुत ही महत्वपूर्ण अवधारणाओं के बारे में बताता है।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद छात्र-

आधुनिक भाषा विज्ञान के आगमन के साथ हुई संस्कृत भाषा का अवलोकन और विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

- ऐतिहासिक भाषाविज्ञान की मूल अवधारणा और भाषा परिवर्तन के नियम और संस्कृत में उनके अनुप्रयोग को समझ सकेंगे।
- भाषा और भाषा विज्ञान के दर्शन के प्राचीन भारतीय विचारकों के योगदान का अवलोकन और सराहना करने में सक्षम होंगे।
- व्याकरण के इतिहास के महत्वपूर्ण प्रासंगिक और उनके उद्देश्य को समझने में सक्षम होंगे।
- शब्द की प्रकृति, अर्थ और उनके संबंध और व्याकरणविदों के स्फोटसिद्धांत को समझने में सक्षम होंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यानसंख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	तिङन्तप्रकरणे 'भू' धातोः रूपाणां सूत्रोल्लेखपूर्वकं सिद्धिः।	15	1
द्वितीयो वर्गः	तिङन्तप्रकरणे 'एध्' धातोः रूपाणां सूत्रोल्लेखपूर्वकं सिद्धिः ।	15	1
तृतीयो वर्गः	कृदन्तप्रक्रिया	15	1
चतुर्थो वर्गः	भाषाविज्ञानम् - भाषाशास्त्रम्, संघटनात्मकभाषाशास्त्रम्, भाषायाः घटकानि, भारोपीयभाषापरिवारः।	15	1
पञ्चमो वर्गः	भाषा विज्ञान- ध्वनिनियमाः- ग्रिम-ग्रासमान-वर्नरश्च, अर्थपरिवर्तनस्य दिशः, कारणानि, स्फोटसिद्धान्तः ।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी - धरानन्द शास्त्री

२. वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी (भैमी व्याख्या) - भीमसेन शास्त्री

३. वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी - डॉ. सुरेंद्र देव शास्त्री

४. भाषा विज्ञान- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

५. भाषा विज्ञान- डॉ. कर्ण सिंह

६. भाषा विज्ञान- रामअवध पाण्डेय, रविनाथ मिश्र

७. भाषा विज्ञान- डॉ. भोलानाथ तिवारी

८. संस्कृत भाषा शास्त्रीय अध्ययन - डॉ. भोला शंकर व्यास

९. भाषा विज्ञान- रामजी उपाध्याय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 403	काव्यं काव्यशास्त्रञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य काव्य प्रकाश के पाठ के माध्यम से भारतीयों के आलोचनात्मक विश्लेषण के विभिन्न आयामों का परिचय देना है, तथा साथ ही साथ नैषध काव्य की माधुर्यता का रसास्वादन कराते हुए मानव मूल्यों से परिचित कराना है |

अधिगम (Learning / Outcome):

पाठ्यक्रम के पूरा होने के बाद छात्र-

- समृद्ध संस्कृत साहित्यिक परंपरा के बारे में जानेंगे |
- निर्धारित साहित्यिक रचना में व्यक्त सौंदर्यवादी राजनीतिक सामाजिक सांस्कृतिक मूल्यों की सराहना करने में सक्षम होंगे, और रस के विचारोत्तेजक अर्थ के महत्व का ज्ञान प्राप्त करेंगे |
- कविता में कविता की अभिव्यक्तियों की सराहना और आनंद लेने में सक्षम होंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	काव्यप्रकाश- प्रथमोल्लासः	15	1
द्वितीयो वर्गः	काव्यप्रकाश- द्वितीयोल्लासः	15	1
तृतीयो वर्गः	काव्यप्रकाश- तृतीयोल्लासः	15	1
चतुर्थो वर्गः	काव्यप्रकाश- चतुर्थोल्लासः	15	1
पञ्चमो वर्गः	नैषधीयचरितम्- (प्रथमसर्गः) 1-65 पद्यपर्यन्तम्	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. मम्मटाचार्यविरचितः -काव्यप्रकाशः – आचार्य विश्वेश्वर

२. मम्मटाचार्यविरचितः -काव्यप्रकाशः – डॉ0 पारसनाथ द्विवेदी

३. मम्मटाचार्यविरचितः -काव्यप्रकाशः – श्री निवास शास्त्री

४. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाशः – श्रीनिवास शर्मा

५. नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्गः) – आचार्य धुरंधर पाण्डेय

६. नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्गः) – शुभा भारद्वाज

७. नैषधीयचरितम् (प्रथमसर्गः) – डॉ0 श्यामलेह कुमार तिवारी

८. नैषधीयचरितम् - डॉ. देवनारायण पाठक

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 404	तर्कभाषाद्वैतवेदान्तश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य छात्रों को तर्क भाषा के न्यायसूत्रों के पठन - पाठन के माध्यम से न्याय दर्शन के कुछ मौलिक सिद्धांतों, अवधारणाओं और सिद्धांतों से परिचित कराना है, तथा अद्वैत वेदांत पर लिखी गयी अपरोक्षानुभूति नामक ग्रन्थ में वर्णित जीवन दर्शन को आत्मसात कराना |

अधिगम (Learning / Outcome):

पाठ्यक्रम में अध्ययन के बाद छात्र-

- न्याय दर्शन की मौलिक अवधारणाओं का समालोचनात्मक विश्लेषण और परीक्षण करने में सक्षम होंगे|
- निर्धारित पाठ और उसमें निहित अवधारणात्मक शब्दों को समझने और समझाने में सक्षम होंगे|
- निर्धारित सिद्धांतों का समालोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे, अभूतपूर्व दुनिया के विश्लेषण और इसके विकास की प्रक्रिया में न्याय दार्शनिकों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जान पाएंगे।
- ज्ञानमीमांसा के अध्ययन में दार्शनिकों के योगदान को समझेंगे जिसका अनुप्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। दैनिक जीवन में न्याय दर्शन एवं जीवन दर्शन के ये सिद्धांत सत्य के उचित निर्णय में उनकी सहायता करेंगे|

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	तर्कभाषा - आदितो प्रत्यक्षप्रमाणपर्यन्तम्	15	1
द्वितीयो वर्ग:	तर्कभाषा - अनुमानप्रमाणात् उपमानप्रमाणं यावत्	15	1
तृतीयो वर्ग:	तर्कभाषा - शब्दप्रमाणात~ प्रामाण्यवादं यावत्	15	1
चतुर्थो वर्ग:	अपरोक्षानुभूति: - 1-50 कारिकापर्यन्तम्	15	1
पञ्चमो वर्ग:	अपरोक्षानुभूति: - 51-100 कारिकापर्यन्तम्	15	1

संस्तुतग्रन्थाः-

१.	केशवमिश्रप्रणीता तर्कभाषा-	श्रीनिवास शास्त्री
२.	केशवमिश्रप्रणीता तर्कभाषा-	गजानन शास्त्री मूसलगांवकर
३.	न्याय दर्शन--	आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
४.	भारतीय दर्शन-	डॉ0 शशिकांत राय
५.	अपरोक्षानुभूति-	आचार्य शांकर
६.	दर्शन भारतीय दर्शन का इतिहास- (पाँच भाग) –	एस्. एन्. दास गुप्ता
७.	भारतीय -	उमेश मिश्र
८.	भारतीय दर्शन –	डॉ0 राधाकृष्णन
९.	भारतीय दर्शन –	चटर्जी एवं दत्त
	Outline of Indian Philosophy –	Hiriyanna

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNM – 406 (Minor)	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : संस्कृतवाग्भूषणम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को संस्कृत साहित्य सामान्य संस्कृत व्याकरण, भारतीय दर्शन का संक्षिप्त परिचय एवं प्रमुख काव्यशास्त्रीय आचार्यो, उनकी कृतियों का सामान्य परिचय एवं छन्द तथा अलंकारों का सामान्य ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्र संस्कृत वांग्मय के इतिहास से सामान्यत: परिचित हो सकेंगे। संस्कृत व्याकरण, दर्शन, काव्य, छंद एवं अलंकारों का सूक्ष्म ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75	
वर्ग:	**पाठ्यवस्तु**		**व्याख्यानसंख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्ग:	संस्कृतसाहित्यस्य संक्षिप्तेतिहास:- वेद-वेदाङ्गानि, रामायण-महाभारतयो: सामाजिक-राजनैतिकप्रभावश्च, हितोपदेश: (सुहृद्भेद: 10 श्लोका:), अभिज्ञानशाकुन्तलम् (श्लोकचतुष्टयम्)।		15	1
द्वितीयो वर्ग:	संस्कृतव्याकरणशास्त्रान्तर्गतं - वर्णपरिचय:, उच्चारणस्थानानि, प्रयत्न: उपसर्गा:, अव्ययं, संख्याज्ञानम् । कारक- विभक्ति-शब्दधातुरूपाणाञ्च सामान्यपरिचय: सम्यगभ्यासश्च। यथा- अस्मद्- युष्मद् -राम- हरि-गुरु-पितृ-रमा-नदी-वधू-मातृ- फलेत्यादय: तथा च पठ्धातो: पञ्चसु लकारेषु रूपाणि।		15	1
तृतीयो वर्ग:	भारतीयदर्शनस्य संक्षिप्तेतिहास:- आस्तिक- नास्तिकदर्शनयो: विवेचनम्। श्रीमद्भगवद्गीता- आत्मन: स्वरूपम्।		15	1
चतुर्थो वर्ग:	संस्कृतकाव्यस्य प्रमुखाचार्या:- (कालिदास- भवभूति- भास- बाणभट्टश्च) तेषां कृतीनां सामान्यपरिचय:। छन्द-अलङ्कारयो: सामान्यज्ञानम् (अनुष्टुप्, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, मन्दाक्रान्ता, शार्दूलविक्रीडितं, वंशस्थञ्च। अनुप्रास-यमक-श्लेष-उत्प्रेक्षा, वक्रोक्त:, निदर्शना, दीपकञ्च) एवञ्च महाकाव्यनाटकयो: लक्षणज्ञानम्।		15	1

संस्तुत- ग्रन्था:-

१. संस्कृत साहित्य का इतिहास-	आचार्य बलदेव उपाध्याय
२. संस्कृत साहित्य का इतिहास-	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
३. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-	बाबूराम सक्सेना
४. संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका-	बाबूलाल बलवंत
५. लघुसिद्धांतकौमुदी-	प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र
६. भारतीय दर्शन की रूपरेखा-	आचार्य बलदेव उपाध्याय
७. भारतीय दर्शन-	डॉ. शशिकांत राय
८. छन्दोऽलंकारसौरभम्-	प्रो. अभिराज राजेन्द्र मिश्र
९. उत्तररामचरितम् -	डॉ. रमाकान्त मिश्र
१०. उत्तररामचरितम् -	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
११. अभिज्ञानशाकुन्तलम् -	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
१२. अभिज्ञानशाकुन्तलम् -	डॉ पी. वी. पराशर

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 405	4

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु षण्मासससत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

द्वितीयषण्मासससत्रम् (Second Semester)

पाठ्यक्रमसं0 (Course Code):	पाठ्यक्रम शीर्षकः (Course Name) :
MSNC - 411	वेदोपनिषद्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक साहित्य के प्रमुख वैदिक देवताओ, अथर्ववेद में राजा के चुनाव, महत्व और उपनिषदों में वर्णित प्राचीन भारतीय शिक्षा एवं वैदिक व्याकरण का व्यापक परिचय देना है, क्योंकि वैदिक व्याकरण का अध्ययन, व्युत्पत्ति, विज्ञान और वैदिक भाषा की विशिष्टता को समझने में मदद करता है।

अधिगम: (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्र –

- वैदिक मंत्रों के माध्यम से प्राकृतिक देवताओं के महत्त्व समझ सकेंगे।
- प्राचीन वैदिक स्वर के मूल सिद्धांतों को जान सकेंगे।
- वैदिक स्वर और वैदिक व्याकरण के ज्ञान से वैदिक मंत्रों को उनके सत्य रूप में पाठ करने का प्रयास करेंगे।
- तैत्तिरीयोपनिषद~ की शिक्षावल्ली में वर्णित शिक्षा, अभ्युदय संहिताविषयक उपासना विधि और पाँच महासंहिताओं- लोकविषयक संहिता, ज्योतिविषयक संहिता, संतानविषयक संहिता, विद्याविषयक संहिता और अध्यात्मविषयक संहिता का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	ऋग्वेदः- इन्द्रसूक्तम् (२.१२), अक्षसूक्तम् (१०.३४) रुद्रसूक्तञ्च (२.३३)	15	1
द्वितीयो वर्गः	ऋग्वेदः- अग्निसूक्तम् (४.७), ज्ञानसूक्तम् (१०.१७), नासदीयसूक्तञ्च (१०.१२९)	15	1
तृतीयो वर्गः	अथर्ववेदः- राज्ञः निर्वाचनम्, राष्ट्राभिवर्धनम् (१.२९) वरुणसूक्तम् (४.१६), पृथिवीसूक्तम् (१२.१) कालसूक्तञ्च (१९.५३)	15	1
चतुर्थो वर्गः	तैत्तिरियोपनिषद्- शिक्षावल्ली।	15	1
पञ्चमो वर्गः	वैदिकव्याकरणम्- वैदिकशब्दरूपाणां वैशिष्ट्यम्, तुमर्थकप्रत्ययाः, लेट्- लुङ्लकारश्च।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. ऋक्सुक्तसङ्ग्रहः – डॉ. हरिदत्त शास्त्री

२. ऋग्वेद संहिता - पं. दामोदरपतद सातवलेकर

३. वेदामृतमञ्जूषिका - डॉ. प्रयागनरायण मिश्र

४. वैदिक व्याकरण – डॉ. रामगोपाल

५. वैदिक साहित्य और संस्कृति – प्रो. बलदेव उपाध्याय

६. वैदिक साहित्य और संस्कृति का वृहद् इतिहास – प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 412	व्याकरणं पालिप्राकृतापभ्रंशश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को लघुसिद्धान्तकौमुदी में वर्णित ण्यन्त-यङन्त-यङ्लुगन्त प्रक्रियाओं, तद्धित प्रकरण के अंतर्गत आने वाले साधारण- अपत्यार्थ-रक्ताद्यार्थक और चातुर्थिक प्रत्ययों का सम्यक् अवरोधन कराना। पालि-प्राकृत एवं अपभ्रंश संग्रह के गद्य-पद्यों के माध्यम से बौद्धकालीन भारत की संस्कृति-सभ्यता और भाषात्मक विशेषताओं का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- व्याकरण के महत्वपूर्ण प्रत्ययों का सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर उनका प्रयोग और संस्कृत भाषा की विशिष्टता को समझ सकेंगे।
- पालि-प्राकृत और अपभ्रंश के गद्यात्मक एवं पद्यात्मक कथाओं के माध्यम से प्राचीन भारतीय सामाजिक, राजनीतिक और चारित्रिक वैशिष्ट्य एवं महत्वपूर्ण बौद्धकालीन अभिलेखों की लिपियों का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	वरदराजकृता लघुसिद्धान्तकौमुदी- ण्यन्त-यङन्त – यङ्लुगन्तप्रक्रिया नामधातुश्च।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	तद्धितप्रकरणम् - अपत्याधिकार:, रक्ताद्यर्थका:, चातुरर्थिकाश्च।	15	1
तृतीयो वर्ग:	पालिपाकृतापभ्रंशसंग्रह:- धम्मपदसंगहो एवञ्च पटिच्चसमुप्पादो।	15	1
चतुर्थो वर्ग:	महापरिनिब्बानसुत्तम्, मायादेविया सुपिनम् प्राकृत – कर्पूरमञ्जरी, अशोकाभिलेख:, मंदसौर एवञ्च गिरनाराभिलेख:।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	अपभ्रंश- अपभ्रंशमुक्तकसंग्रह:, सन्देशरासकम्, दोहाकोशश्च।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. लघुसिद्धांतकौमुदी (भैमीव्याख्यासहितम्) -	भीमसेन शास्त्री
२. लघुसिद्धांतकौमुदी -	श्री धरानंद शास्त्री
३. लघुसिद्धांतकौमुदी -	लाल बहादुर कुशवाहा
४. भाषा विज्ञान -	भोलानाथ तिवारी
५. भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र -	कपिल देव द्विवेदी
६. भाषा विज्ञान -	भोला शंकर व्यास एवं कर्ण सिंह
७. संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन -	भोला शंकर व्यास
८. पालि-प्राकृत एवं अपभ्रंश संग्रह -	डॉ. राम अवध पाण्डे
९. पालिमहाव्याकरण -	जे. कश्यप
१०. प्राकृत भाषाओं का व्याकरण -	एच. सी. जोशी
११. Introduction to Comparative Philology –	Gune
१२. Phonetics in Ancient India –	W. S. Allen

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 413	काव्यशास्त्रालङ्कारश्चम्पूकाव्यञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को काव्य के शोभाधायक तत्व अलंकारों से परिचित कराना तथा की गद्य-पद्यमयी रचना चम्पू काव्य का रसास्वादन कराना है |

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र काव्य प्रकाश में उल्लिखित अलंकारों का अपनी रचना में प्रयोग कर सकेंगे तथा चम्पू काव्य के वैशिष्ट्य से परिचित हो सकेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	मम्मटाचार्यकृतकाव्यप्रकाशः- नवमोल्लासान्तर्गतानाम् अलङ्काराणां लक्षणोदारणानि च।	15	1
द्वितीयो वर्गः	काव्यप्रकाशः- दशमोल्लासः- अधोलिखितानामलङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि..... उपमा-अनन्वय-उत्प्रेक्षा-रूपक-समासोक्ति-निदर्शना-अपह्नुतिश्च।	15	1
तृतीयो वर्गः	काव्यप्रकाशः- दशमोल्लासः- अधोलिखितानामलङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि..... दृष्टान्त-विभावना-विशेषोक्ति-स्वभावोक्ति-विरोधाभासः- अर्थान्तरन्यासश्च।	15	1
चतुर्थो वर्गः	काव्यप्रकाशः- दशमोल्लासः- अधोलिखितानामलङ्काराणां लक्षणोदाहरणानि..... उदात्त-समुच्चय-अनुमान-परिकर-व्याजोक्ति-परिसंख्या तथा च असंगतिः।	15	1
पञ्चमो वर्गः	त्रिविक्रमभट्टकृतनलचम्पूकाव्यम् (प्रथमोच्छ्वासः)	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश - आचार्य विश्वेश्वर

२. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश - डॉ. पारसनाथ द्विवेदी

३. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शास्त्री

४. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश - श्रीनिवास शर्मा

५. नलचम्पू – श्री धरानन्द शास्त्री

६. नलचम्पू – तारिणीश झा

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name)
MSNC - 414	सांख्यवेदान्तदर्शनञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

पाठ्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य सांख्यकारिका और वेदान्तसार के पठन के माध्यम से छात्रों को कुछ मौलिक सिद्धांतों की अवधारणा और कुछ सांख्य एवं वेदान्तदर्शन के सिद्धांतों से परिचित कराना है। यह छात्र को भारतीय दार्शनिक प्रणाली के विभिन्न सिद्धांतों के विश्लेषण की बुनियादी बौद्धिक समझ हासिल करने में भी मदद करेगा।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के बाद छात्र-

- सांख्य और वेदांत दर्शन की मौलिक अवधारणा का समालोचनात्मक विश्लेषण और परीक्षण करने में सक्षम होंगे।
- निर्धारित पाठ और उसमें निहित अवधारणात्मक शब्दों को समझने और समझाने में सक्षम होंगे।
- अभूतपूर्व दुनिया और विकास की प्रक्रिया के विश्लेषण में सांख्य और वेदांत दार्शनिकों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को जानने के लिए निर्धारित सिद्धांतों का समालोचनात्मक विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।
- तार्किक अध्ययन में सांख्य और वेदांत दार्शनिकों के योगदान को समझ सकेंगे, जो आज के जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।
- सत्य के उचित निर्णय में उनकी मदद करने वाली जीवन स्थितियां समझ सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	सांख्यकारिका- प्रथमकारिकातः - विंशतिकारिकां यावत्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	सांख्यकारिका- एकविंशतिकारिकातः पञ्चचत्वारिंशत्कारिकां यावत्।	15	1
तृतीयो वर्गः	सांख्यकारिका- षड्चत्वारिंशत्कारिकातः समाप्तिपर्यन्तम् ।	15	1
चतुर्थो वर्गः	वेदान्तसारः - मङ्गलाचरणात् पञ्चीकरणप्रकियां यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	वेदान्तसारः - भौतिकसृष्टिप्रक्रियातः विदेहमुक्ति- निरूपणपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. सांख्य तत्व कौमुदी –	व्याख्याकार: डॉ. संतनरायणलाल श्रीवास्तव
२. सांख्य तत्व कौमुदी –	व्याख्याकार: गजानन शास्त्री मुसलगांवकर
३. सांख्य तत्व कौमुदी –	व्याख्याकार: आद्याप्रसाद मिश्र
४. दर्शन भारतीय दर्शन का इतिहास (पाँच भाग) –	एस्. एन्. दास गुप्ता
५. भारतीय -	उमेश मिश्र
६. भारतीय दर्शन –	डॉ. राधाकृष्णन
७. भारतीय दर्शन –	चटर्जी एवं दत्त
८. Outline of Indian Philosophy –	Hiriyanna

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 415	4

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य पाठ्यक्रम:

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

तृतीयषण्मासिकसत्रम् (Third Semester)

पाठ्यक्रमसं0 (Course Code):	पाठ्यक्रम शीर्षक (Course Name) :
MSNC - 501	महाभाष्यम् एवञ्च स्वशास्त्रीयनिबंध:

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को व्याकरण के दार्शनिक स्वरूप के विस्तार से परिचित कराते हुए उनमें अपने शास्त्र से संबद्ध गंभीर विषयों पर निबंध लेखन की प्रवृत्ति को विकसित करना, तथा शास्त्रीय निबंध लेखन के सोपान की जानकारी प्रदान करना |

अधिगम: (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- व्याकरण के दार्शनिक स्वरूप से परिचित होकर व्याकरण दर्शन के प्रयोजन को समझ सकेंगे |
- में स्वशास्त्र से संबद्ध शास्त्रीय विषयों पर निबंध लेखन की प्रवृत्ति विकसित होगी |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	महाभाष्यम् (प्रथमाह्निकम्)– आरम्भतः व्याकरणाध्ययनस्य प्रयोजनपर्यन्तम्। (शब्दस्वरूपं व्याकरणस्य मुख्यगौणप्रयोजनञ्च)	15	1
द्वितीयो वर्ग:	'सिद्धे शब्दार्थसम्बन्धे' वार्तिकात् 'आचारे नियमः' 'इति' वार्तिकपर्यन्तम्। (नित्यत्वस्वरूपं लोकव्यवहारे शब्दार्थनित्यता- धर्मनियमानुशासनञ्च)	15	1
तृतीयो वर्ग:	~'प्रयोगे सर्वलोकस्य' 'इति' वार्तिकात् पस्पशाह्निकान्तपर्यन्तम्। (व्याकरणपदार्थविवेचनं वर्णोपदेशप्रयोजनम् आगमादिशुद्धोचारणस्य समर्थनञ्च)	15	1
चतुर्थो वर्ग:	उपर्युक्त-वर्गत्रयात~ समीक्षात्मकप्रश्नानि। (व्याकरणपदार्थविवेचनं वर्णोपदेशप्रयोजनं आगमादिशुद्धोचारणस्य समर्थनञ्च)	15	1
पञ्चमो वर्ग:	स्वशास्त्रीयनिबन्ध:	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. व्याकरण महाभाष्यम् - जय शंकर लाल त्रिपाठी

२. व्याकरण महाभाष्यम् - प्रथमं पस्पशाह्निकम् - वेद प्रकाश विद्यावाचस्पति

३. संस्कृतनिबंधसंग्रहः- .डॉ. पूर्णिमा आचार्य

४. संस्कृतनिबन्धशतकम्- डॉ. कपिल देव द्विवेदी

५. संस्कृतनिबन्धनिचयः- डॉ. राजेंद्र मिश्र

६. संस्कृतनिबन्धरत्नाकरः - डॉ. शिव प्रसाद भरद्वाज

७. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास - युधिष्ठिर मीमांसक, चौखम्बा पब्लिशर्स।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC - 502	भारतीयसंस्कृति: पर्यावरणञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को भारतीय संस्कृति से परिचित कराते हुए संस्कृति की विशेषता, विकास, संस्कृति और सभ्यता में अंतर तथा अन्य संस्कृतियों पर भारतीय संस्कृत के प्रभाव का ज्ञान प्रदान करना।

वैश्विक महासंघ कट पर्यावरण से परिचित कराते हुए पर्यावरण के घटक संरक्षण और उपाय तथा 'संस्कृत साहित्य में पर्यावरणीय चेतना' के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

- भारतीय संस्कृति से परिचित होकर उसके अन्य देशों की संस्कृतियों पर प्रभाव और महत्व को समझ सकेंगे।
- प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं पर्यावरण की प्रासंगिकता और उपादेयता की जानकारी प्राप्त करके पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्व को समझ सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	भारतीयसंस्कृति:- अर्थ- परिभाषा-विशेषता:- मूलतत्वं, भारतीयसंस्कृते: विकास:, संस्कृतेः सभ्यतायाः अन्तरणम् भारतीयसंस्कृते: अन्यसंस्कृतिषु प्रभाव:।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	मनुस्मृति- (प्रथमोऽध्याय:)- सृष्टि उत्पत्ति (श्लोक 14-41 पर्यन्त) । मनुस्मृति- द्वितीयोऽध्याय:- धर्म का लक्षण- (श्लोक 1-16 पर्यन्त) । वर्णधर्म (श्लोक 27-69 पर्यन्त) । राजधर्म (श्लोक 1-60 पर्यन्त) ।	15	1
तृतीयो वर्ग:	याज्ञवल्क्यस्मृति (आचाराध्याय)- ब्रह्मचारिप्रकरणम्, (श्लोक 10-50) विवाहप्रकरणम् (श्लोक 10-50 पर्यन्त) गृहस्थधर्मप्रकरणम् (श्लोक 97-128 पर्यन्त) व्यवहाराध्याय- ऋणदानप्रकरणम् (श्लोक 97-128 पर्यन्त) साक्षीप्रकरणम् (श्लोक 97-128 पर्यन्त)	15	1
चतुर्थो वर्ग:	प्राचीनभारतीयशिक्षा-व्यवस्था (वैदिक कालीन एवं बौद्धकालीन)।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	पर्यावरणशब्दस्य व्युत्पत्ति:, अर्थ-परिभाषा- माहात्म्यञ्च। पर्यावरणस्य तत्वानि, पर्यावरणस्य हानिकारकानि घटकानि, संरक्षणोपाया:, पर्यावरणं दूरीकर्तुं मार्गा: तथा च संस्कृतसाहित्ये पर्यावरणीयचेतना।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१३. वैदिक व्याकरण - डॉ. रामगोपाल, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली ।

१४. वैदिक साहित्य और संस्कृति - पं. बलदेव उपाध्याय, शारदा प्रकाशक, जयपुर ।

१५. वैदिक साहित्य और संस्कृति का बृहद इतिहास – डॉ. जगन्नाथ पाठक, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ

१६. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति – डॉ. कपिल देव द्विवेदी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी ।

१७. वैदिक साहित्य एवं संस्कृति - डॉ. वाचस्पति गैरोला, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ।

१८. पर्यावरण अध्ययन - रमा माथुर, संजय प्रकाशन दिल्ली ।

१९. मनुस्मृति- व्याख्याकार - पं० रामेश्वरभट्ट, सम्यक प्रकाशन, नई दिल्ली ।

२०. मनुस्मृति- व्याख्याकार – गिरधर गोपाल शर्मा, चौखम्बा प्रतिष्ठान, नई दिल्ली ।

२१. याज्ञवल्क्य स्मृति- डॉ० उमेश चन्द पाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत संस्थान वाराणसी ।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name)
MSNE – 503 A	संहिताब्राह्मणयज्ञश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को वैदिक संहिताओं (ऋक्-यजु:-अथर्व), और ब्राह्मण ग्रन्थों का ज्ञान प्रदान करना, तथा साथ ही साथ वैदिक यज्ञ से भी परिचित कराना है, जिससे वे अपनी प्राचीन यज्ञ परंपरा का संरक्षण कर सकें।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस वैकल्पिक प्रश्न पत्र को पढ़ने के पश्चात छात्र-

- वैदिक संहिताओं और ब्राह्मण ग्रंथों में वर्णित प्राचीन भारतीय संस्कृति को जान सकेंगे तथा पर्यावरण को शुद्ध करने वाले वैदिक यज्ञों से परिचित हो सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75	
वर्ग:	**पाठ्यवस्तु**		**व्याख्यान संख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्ग:	ऋग्वेदसंहिता- विश्वेदेवासूक्तम् (१.८९) एवञ्च पूषन्सूक्तम् (६.५३) मित्रसूक्तम् (३.५९)।		15	1
द्वितीयो वर्ग:	शुक्लयजुर्वेद:- माध्यन्दिनसंहिता- प्रथमोऽध्याय:- प्रथमकण्डिकात: पञ्चदशकण्डिका यावत्।		15	1
तृतीयो वर्ग:	अथर्ववेदसंहिता - दीर्घायु: प्राप्तिसूक्तम् (२.४), कृषिसूक्तम् (३.१७), राज्ञ: स्वराजि पुन:स्थापना (३.३)।		15	1
चतुर्थो वर्ग:	ऐतरेयब्राह्मणम्- प्रथमपञ्चिका (प्रथमोऽध्याय:)।		15	1
पञ्चमो वर्ग:	वैदिकयज्ञा:, यज्ञानां भेदा:, यज्ञेषु प्रयुज्यमानान्युपकरणानि एवञ्च प्रमुखपारिभाषिकशब्दा:।		15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१.	ऋग्वेदसंहिता -	पंडित राम गोविंद त्रिवेदी
२.	ऋग्वेद -	डॉ गंगा सहाय शर्मा
३.	ऋग्वेद संहिता यथार्थ अनुवाद -	महेश चंद्र माहेश्वरी प्रसन्न चंद गौतम
४.	अथर्ववेदसंहिता -	पंडित रामस्वरूप शर्मा गौड़
५.	शतपथ ब्राह्मण –	डॉ. सुंदर नारायण झा
६.	यजुर्वेद संहिता-	मूलमात्र चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान
७.	यजुर्वेद संहिता -	पंडित ईश्वर चंद्र
८.	यजुर्वेद संहिता -	महर्षि दयानंद सरस्वती
९.	ऋग्वेद संहिता हिंदी भावार्थ सहित-	पंडित श्री राम शर्मा अचार्य
१०.	वैदिक वांग्मय का इतिहास –	पंडित भगवत दत्त
११.	ऐतरेयब्राह्मण -	प्रो. उमेश प्रसाद मिश्र
१२.	ऐतरेयब्राह्मण -	डॉ. सुधाकर मालवीय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 503 B	**पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :** प्रक्रिया

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को संस्कृत व्याकरण प्रक्रिया के माध्यम से समस्त पदों का विग्रह, सिद्धि प्रक्रिया एवं अर्थज्ञान कराना। छात्रों को व्याकरणशास्त्र की प्रौढ़ परंपरा से परिचित कराते हुए उत्कृष्ट व्याकरण प्रक्रिया का ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात् छात्र-

- संस्कृत व्याकरण से संबंधित समासप्रकरण का परिचय, परिभाषा, भेद, सामासिक पदों का लौकिक और अलौकिक विग्रह, समासरूप सिद्धि प्रक्रिया एअवं अर्थज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
- संस्कृत व्याकरण के गूढ़ प्रक्रिया को समझ सकेंगे। व्याकरण में शास्त्रार्थ करने की प्रवृत्ति विकसित होगी, तथा व्याकरण के सूत्रों का निगमन छात्र कर सकेंगे।

क्रेडिट: **5**	पूर्णांक: **75 + 25**	उत्तीर्णांक: **33** प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - **75**

वर्गः	**पाठ्यवस्तु**	**व्याख्यान संख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्गः	अव्ययीभावसमासः- आदितः समाप्तिपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	तत्पुरुषसमासः- आदितः 'वर्णो वर्णेन' सूत्रपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	'कडाराः कर्मधारये' सूत्रात् समाप्तिपर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	बहुव्रीहिसमासः- आदितः समाप्तिपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	द्वन्द्वसमासः आदितः समाप्तिपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुतग्रन्था:

१. भट्टोजि दीक्षित कृत वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी - (बाल मनोरमा) वासुदेव दीक्षित, चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी ।

२. भट्टोजि दीक्षित कृत वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी - श्री गोविन्दाचार्य, हिन्दी व्याख्या, चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी ।

३. भट्टोजि दीक्षित कृत वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी - ज्ञानेंद्र सरस्वती, चौखम्बा पुस्तक भवन, वाराणसी ।

४. भट्टोजि दीक्षित कृत वैयाकरण सिद्धान्त कौमुदी – श्री गोपालदत्त पाण्डेय, हिंदी टीका, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी ।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNE – 503 C	काव्यं नाट्यशास्त्रञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को काव्यशास्त्र, काव्यशास्त्र के मूलभूत सिद्धांत एवं काव्य की उत्कृष्ट परंपरा का अवबोधन कराना।
संस्कृत नाट्यविद्या का सामान्य परिचय कराते हुए नाट्यविधाओं का ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के फलस्वरूप छात्र काव्य के व्यंग्यात्मक भेद, रस, रस के भेद, गुणदोषादि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। नाट्यशास्त्र की विधाएं, नाट्य संधियों, नायक- नायिका भेदादि का सम्यक् अध्ययन कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत	आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75	
वर्ग:	**पाठ्यवस्तु**		**व्याख्यान संख्या**	**क्रेडिट संख्या**
प्रथमो वर्ग:	काव्यप्रकाश: - पञ्चमोल्लास:- गुणीभूतव्यंग्य, एवञ्च गुणीभूतव्यंग्यस्य भेदपर्यन्तम्।		15	1
द्वितीयो वर्ग:	काव्यप्रकाश: - षष्ठमोल्लास:। काव्यप्रकाश: - सप्तमोल्लास:- वाक्यगतदोषपर्यन्तम्।		15	1
तृतीयो वर्ग:	अष्टमोल्लास: - गुणालङ्कारभेदनिर्णय:		15	1
चतुर्थो वर्ग:	दशरूपकम् - प्रथमप्रकाश: - ग्रन्थप्रयोजनम्, नाट्यस्वरूपम्, रूपकभेदा: भेदकतत्वानि च। अर्थप्रकृतय:, कार्यावस्था:, सन्धि- सन्धिभेदश्च, विष्कम्भक: जनान्तिकञ्च। दशरूपकम्- द्वितीयप्रकाश: - नायक- नायिका, तयो: भेदा:, एवञ्च भारती आदि वृत्तय: पर्यन्तम्।		15	1
पञ्चमो वर्ग:	दशरूपकम्- तृतीयप्रकाश: - रूपकभेदा:, चतुर्थो प्रकाश:- आदितो- दशरूपकसिद्धान्तपर्यन्तम्।		15	1

संस्तुतग्रन्था:

१. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: -	आचार्य विश्वेश्वर
२. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: –	डॉ. पारसनाथ द्विवेदी
३. मम्मटाचार्यकृत-काव्यप्रकाश: –	श्रीनिवास शास्त्री
४. भारतमुनि विर्चितम् नाट्यशास्त्रम् -	प्रो. बृजमोहन चतुर्वेदी
५. भारतमुनि विर्चितम् नाट्यशास्त्रम् (१ - २ अध्याय) –	पं. श्री जगन्नाथ शास्त्री तैलंग
६. दशरूपकम् -	डॉ. रामशंकर त्रिपाठी
७. दशरूपकम् -	डॉ. भोला शंकर व्यास
८. दशरूपकम् -	डॉ. रामजी उपाध्याय
९. दशरूपकम् -	बैजनाथ पाण्डेय
१०. नाट्यशास्त्र की भारतीय परंपरा और दशरूपक -	हजारी प्रसाद द्विवेदी , पृथ्वीनाथ द्विवेदी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNC – 503 D	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : न्यायवैशेषिकसिद्धान्त:

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को न्याय एवं वैशेषिक दर्शन परम्परा से परिचित कराते हुए न्याय दर्शन के सिद्धांतों के निरूपण एवं उनके उद्देश्यों की सार्थकता से अवगत कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र वस्तुतः अपनी बुद्धि को सुपरिष्कृत, तीव्र और विशद बना सकेंगे । न्यायशास्त्र उच्चकोटि के संस्कृत साहित्य (और विशेषकर भारतीय दर्शन) का प्रवेशद्वार है। उसके प्रारम्भिक परिज्ञान के बिना किसी ऊँचे संस्कृत साहित्य को समझ पाना कठिन है, चाहे वह व्याकरण, काव्य, अलंकार, आयुर्वेद, धर्मग्रन्थ हो या दर्शनग्रन्थ। दर्शन साहित्य में तो उसके बिना एक पग भी चलना असम्भव है।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	१. प्रशस्तपादभाष्यम् (पदार्थधर्मसंग्रहः) द्रव्यनिरूपणम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	२. प्रशस्तपादभाष्यम् (पदार्थधर्मसंग्रहः) गुणकर्मनिरूपणम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	३. प्रशस्तपादभाष्यम् (पदार्थधर्मसंग्रहः)- सामान्य-विशेष-समवायनिरूपणञ्चेति।	15	1
चतुर्थो वर्गः	४. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली- (शब्दखण्डम्)- शक्तिनिरूपणतः पदनिरूपणपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	५. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (शब्दखण्डम्)- लक्षणानिरूपणतः शाब्दबोधे हेतुनिरूपणपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. प्रशस्तपादभाष्यम्- पदार्थधर्मसंग्रहार्थम् -	प्रशस्तपाद मुनिप्रणीत
२. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (बालप्रिया)-	श्री विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य
३. न्यायसिद्धान्तमुक्तावली (कारिकावली)-	डॉ. गायत्री शुक्ला
४. न्यायदर्शन -	आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
५. वैशेषिक दर्शन -	आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री
६. प्रशस्तपादभाष्यम् -	श्री दुर्गाधार झा
७. प्रशस्तपादभाष्यम् -	श्रीधर भट्ट
८. न्यायदर्शन -	डॉ. उदय कुमठेकर
९. न्यायदर्शन -	स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती
१०. भारतीय न्याय शास्त्र -	स्वामी अनंत भारती एवं डॉ. ब्रम्हमित्र अवस्थी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 A	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : वेदाङ्गानि

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वेदाङ्गो के माध्यम से वैदिक शाखाओं के प्रारंभ, स्वरूप और प्रवृत्ति का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcomes):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र वर्ण विवेचन, वर्ण उच्चारण के दोष, संहितागत वर्णसंधिया और क्रम पाठ आदि का ज्ञान प्राप्त करेंगें। वेदाङ्गो में निहित ज्ञान राशि- शिक्षा, कल्प, सामान्य अर्थसंग्रह आदि का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	ऋक्प्रातिशाख्यम्- प्रथमपटलं सम्पूर्णम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	ऋक्प्रातिशाख्यम्- द्वितीपटलं सम्पूर्णम्	15	1
तृतीयो वर्गः	पारस्करगृह्यसूत्रम् (प्रथमकाण्डम्)- १ कण्डिकात् १२ कण्डिकां यावत्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	वैदिक स्वर परिचयः । सिद्धान्तकौमुदी- वैदिकस्वराणां सूत्राणि।	15	1
पञ्चमो वर्गः	लौगाक्षिभास्करकृत अर्थसंग्रहः- आदितो विनियोगविधिपर्यन्तम् एवञ्च प्रयोगविधेः सामान्य-परिचयः।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. महर्षि शौनकप्रनीतं ऋक्प्रतिशाखायम् - युगल किशोर व्यास, प्रभदत्त शर्मा

२. ऋक्प्रतिशाखायम् - डॉ. वीरेंद्र कुमार शर्मा

३. पारस्करगृह्यसूत्रम् - डॉ. सुधाकर मालवीय

४. पारस्करगृह्यसूत्रम् - डॉ. जगदीश मिश्र

५. पारस्करगृह्यसूत्रम् - पारस्कर चौखम्भा ओरिएंटलिए , दिल्ली

६. पारस्करगृह्यसूत्रम् - डॉ. जमुना पाठक

७. सिद्धान्तकौमुदी

८. लौगाक्षिभास्करकृत अर्थसंग्रह

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 B	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) वाक्यपदीयम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वाक्यपदीय ग्रंथ के माध्यम से व्याकरण दर्शन की उत्कृष्टता से परिचित कराना |

अधिगम (Learning / Outcome):

इस ग्रंथ के अध्ययन के पश्चात छात्र व्याकरण दर्शन के महत्वपूर्ण अंगों को समझ सकेंगे तथा व्याकरण प्रक्रिया का ज्ञान प्राप्त करेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	वाक्यपदीयम्- आदितो ४३ कारिकां यावत्। शब्दब्रह्मस्वरूपम्, शब्दब्रह्मणः शक्तयः, व्याकरणप्रयोजनं, शब्दनित्यता, व्याकरणनिर्माणप्रक्रियायाम् आगमप्रमाणश्च।	15	1
द्वितीयो वर्गः	वाक्यपदीयम्- ४४ कारिकात् ७४ कारिकां यावत्। (शब्दभेदाः, शब्दवाक्ययोश्चैकत्वम्)	15	1
तृतीयो वर्गः	वाक्यपदीयम्- ७५ कारिकात् १०६ कारिकां यावत्। (स्फोट-ध्वनिः, पद-वाक्यं वर्णपदवाक्यग्रहणञ्च)	15	1
चतुर्थो वर्गः	वाक्यपदीयम्- १०७ कारिकात् १३२ कारिकां यावत्। (शब्दभावोत्पत्तिः, शब्दब्रह्मणः सर्वव्यापकता, वाग्रूपतायाः अनुगमश्च)	15	1
पञ्चमो वर्गः	वाक्यपदीयम्- १३३ कारिकात् अन्तिमां कारिकां यावत्। (व्याकरणप्रमाणानि 'साधु' शब्दस्य पुण्यजनकता, व्याकरणलक्ष्यानि, वेदमूलकतर्कशास्त्रस्यावश्यकता, जगतः नित्यत्वे प्रामाण्यानि च)	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. वाक्यपदीयपर्यन्तम् - (ब्रह्मकाण्डम्)	पं. शिवशंकर अवस्थी
२. वाक्यपदीयम् (ब्रह्मकाण्डम्)-	सूर्यनारायण शुक्ल, चौखंभा संस्कृत सीरीज वाराणसी
३. वाक्यपदीयम् (पदकाण्डपर्यन्तम्)-	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, डॉ. कुंदन कुमार
४. वाक्यपदीयम् (वाक्यकाण्डम्) -	डॉ. वेद प्रकाश मिश्र, डॉ. कुंदन कुमार
५. वाक्यपदीयम् -	पं. श्री रघुनाथ शर्मा
६. वाक्यपदीयम्-	पं. शिवशंकर अवस्थी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 C	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : खण्डकाव्यं महाकाव्यञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

अध्येताओं को संस्कृत खंडकाव्य एवं महाकाव्य का सम्यक् अवबोधन कराना।

काव्य मे निहित रस, छन्द, अलङ्कार एवं शैलियो का ज्ञान प्रदान करना

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात अध्येता गीति काव्य की छन्दोमयी माधुर्य का रसास्वादन, कथा साहित्य की शैलीगत उत्कृष्टता एवं महाकाव्य की पौराणिकता और ऐतिहासिकता से परिचित हो सकेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	कालिदासकृत- मेघदूतम् (पूर्वमेघः) १ पद्यात् ३० पद्यानि पर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	कालिदासकृत- मेघदूतम् (पूर्वमेघः) ३१ पद्यतः पद्यन्तपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	कादम्बरीकथामुखम् - आरम्भतः शुकवर्णनपर्यन्तम्	15	1
चतुर्थो वर्गः	कादम्बरीकथामुखम्- सभाभङ्गतः विन्ध्याटवीवर्णनपर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	अश्वघोषकृत बुद्धचरितम्- प्रथमो सर्गः।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

1.कालिदास कृतं मेघदूतम् - डॉ. बलवन्त सिंह यादव

2.कालिदास कृतं मेघदूतम् - डॉ. आर. वी. शास्त्री

3. कादम्बरीकथामुखम् - पं विश्वनाथ त्रिपाठी

4. कादम्बरीकथामुखम् - डॉ. राकेश शास्त्री

5.कादम्बरीकथामुखम् - डॉ. शिवबालक द्विवेदी

6.कादम्बरीकथामुखम् - डॉ. उमाकांत चतुर्वेदी

7.कादम्बरीकथामुखम् - डॉ. नर्मदेश्वर कुमार त्रिपाठी

8.अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम् - महंत रामचंद्र शास्त्री

9.अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम् - काशी नागरी प्रचारणी सभा

10.अश्वघोषकृतं बुद्धचरितम् - सूर्यनारायण चौधरी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 504 D	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : बौद्धमीमांसादर्शनम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को बौद्ध दर्शन की परम्परा से परिचित कराते हुए मीमांसा दर्शन के प्रौढ़ चिंतन का ज्ञान कराना। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य मीमांसा दर्शन की समृद्ध परंपरा को प्रकाश में लाना है।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के पश्चात छात्र-

बौद्ध दर्शन के सिद्धांत 'शून्यवाद' (विज्ञानवाद) को समझ सकेंगे। बौद्ध दर्शन एवं मीमांसा दर्शन की व्याख्या करने में सक्षम होंगे। भारतीय रीति-रिवाजों के लिए उपयोगी विभिन्न गतिविधियों के तर्क को समझने में सक्षम होंगे। आत्मा के अस्तित्व और दैवीय सशक्तिकरण को मुक्त कर इन्द्रिय भोग की उपेक्षा करने का अभ्यास कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	१.नागार्जुनकृता पूर्वमाध्यमिककारिका- १३ प्रकरणम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	नागार्जुनकृता पूर्वमाध्यमिक-कारिका- १८ प्रकरणम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	नागार्जुनकृता पूर्वमाध्यमिककारिका- २४ प्रकरणम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	मीमांसादर्शनस्य प्रमाणानि।	15	1
पञ्चमो वर्गः	मीमांसादर्शनस्य प्रमेयानि।	15	1

संस्तुतग्रन्था:

१. नागार्जुन कृत मूल माध्यमिक कारिका

२. मध्यमकशास्त्र और विग्रह व्यावर्तनी- यशदेव शल्य

३. मीमांसादर्शनम्- विधोदयभाष्यम्- आचार्य उदयवीर शास्त्री

४. जैमिनीय- मीमांसा-भाष्यम् - पं. युधिष्ठिर मीमांसक

५. मीमांसा दर्शन में प्रमाण विमर्श- डॉ. पवन व्यास

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 505	4

राष्ट्रीयशिक्षानीति: 2020

सिद्धार्थविश्वविद्यालयकपिलवस्तु षण्मासिकसत्राधारितपरास्नातकसंस्कृतस्य

पाठ्यक्रम:

(M.A. Sanskrit Semester Based Syllabus - NEP 2020)

चतुर्थषण्मासिकसत्रम~ (Fourth Semester)

पाठ्यक्रमसं0 (Course Code):	पाठ्यक्रम शीर्षक (Course Name) :
MSNC – 511 (अनिवार्यम्)	व्याकरणमनुवादश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को संस्कृत व्याकरण की प्रक्रिया (व्यावहारिक पक्ष) से परिचित कराते हुए व्यावहारिक संस्कृत का ज्ञान प्राप्त कराना जिससे वे दैनन्दिन व्यवहार में संस्कृत भाषा का अधिकाधिक प्रयोग कर सके।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के फलस्वरूप छात्र संस्कृत व्याकरण की वैज्ञानिकता को समझ सकेंगे। संस्कृत ग्रन्थों के पठन- पाठन, लेखन तथा बोलचाल की भाषा के रूप में इसका प्रयोग एवं अनुप्रयोग कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	सिद्धांतकौमुदी (कारकप्रकरणम्)- कर्ता एवञ्च कर्मकारकम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	सिद्धांतकौमुदी (कारकप्रकरणम्) - करणं तथा च सम्प्रदानकारकम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	सिद्धांतकौमुदी (कारकप्रकरणम्) - अपादानकारकं तथा च सम्बन्धः (षष्ठी विभक्ति)।	15	1
चतुर्थो वर्गः	सिद्धांतकौमुदी (कारकप्रकरणम्) - अधिकरणकारकम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	हिन्दीभाषायाः अनुच्छेदानां संस्कृतेऽनुवादः।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. लघुसिद्धान्तकौमदी (व्याकरण प्रवेशिका)- बाबूराम सक्सेना।

२. लघुसिद्धान्तकौमदी- कारकप्रकरणम्- प्रो. आद्या प्रसाद मिश्र।

३. सरल रचना अनुवाद कौमुदी- डॉ. कपिल देव द्विवेदी।

४. प्रौढ़ रचना अनुवाद कौमुदी- डॉ. कपिल देव द्विवेदी।

५. लघुसिद्धान्तकौमदी (कारकप्रकरणम्) (भैणी व्याख्या) डॉ. भीमसेन शास्त्री।

६. वाग्व्यवहारः- (प्रथम-दीक्षा) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय नव देहली।

७. व्यवहारप्रदीपः- (द्वितीय-दीक्षा) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय नव देहली।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) :
MSNC – 512 (अनिवार्यम्)	आधुनिकसंस्कृतसाहित्यम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

पाठ्यक्रम का उद्देश्य आधुनिक संस्कृत महाकाव्य काव्य की निरंतरता को उसके पारंपरिक शैलियों में प्रदर्शित करना है। छात्रों में ऐतिहासिक राष्ट्रवादी और धार्मिक प्रवृत्ति का समावेश करना है और यह दिखाने का प्रयास करना है कि संस्कृत काव्य एक जीवित परंपरा कैसे है।

अधिगम (Learning / Outcomes):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्र आधुनिक संस्कृत गद्य के प्रमुख नमूनों का ज्ञान प्राप्त करेंगे और कविता की संस्कृत काव्य के क्षेत्र में नए दृष्टिकोण की समझ होगी। काव्य के आधुनिक और प्राचीन विचारों की तुलना कर सकेंगे। निर्धारित ग्रंथों को समझाने और समालोचनात्मक विश्लेषण करने की क्षमता हासिल करेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	आधुनिक-संस्कृत-महाकाव्यम् **स्वातंत्र्यसम्भवम् (द्वितीयसर्ग:)-** प्रो० रेवाप्रसादद्विवेदी (व्याख्या एवं समीक्षात्मक प्रश्न)	15	1
द्वितीयो वर्ग:	**आधुनिकसंस्कृतगीतिकाव्यम्-** **(क) वारिपर्णी – प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र** (गीत सं०-2, 12, 15, 59) **(ख) नवेक्षिका- प्रो० हरिदत्त शर्मा** (गीत सं०- 3, 14, 16, 28) **(ग) दीपमाणिक्यम्- प्रो० जनार्दन प्रसाद मणि** (गीत सं०-16, 41, 53, 67) **(घ) पिपासा- प्रो० जगन्नाथ पाठक** कीदृशी चर्चा, नमस्तस्यै, समे किशोरा: समे युवान:।	15	1
तृतीयो वर्ग:	आधुनिकसंस्कृतनाट्यम्- **(क) समर्चितमृत्तिकम्- 'नाट्यपञ्चामृतम्'** (प्रो० अभिराज राजेन्द्र मिश्र) **(ख) अबलाबलम्- 'आक्रन्दनम्'** (प्रो० हरिदत्त शर्मा) **(ग) प्रतीक्षा – 'प्रेक्षणसप्तकम्'** प्रो० राधावल्लभ त्रिपाठी	15	1

चतुर्थो वर्गः	आधुनिक-संस्कृत-कथा-साहित्यम् **(क) मतदानम्-** कथाकौमुदी, प्रो० प्रभुनाथ द्विवेदी **(ख) बुभुक्षा -** 'बुभुक्षा'- प्रो० बनमाली विश्वाल **(ग) दम्भज्वरः-** 'भारती'- देवर्षि कलानाथ शास्त्री **(घ) अन्तिमः क्षणः-** 'विविधा' महेशचन्द्र शर्मा 'गौतम'	15	1
पञ्चमो वर्गः	**राष्ट्रभक्ति परक/ सामाजिक समस्या मूलक लघु काव्य (आधुनिक-संस्कृत-मुक्तक-काव्यपरम्परा)**	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

२३. वारिपर्णी- वैजयन्त प्रकाशन, इलाहाबाद ।

२४. नवेक्षिका- राका प्रकाशन, प्रयागराज ।

२५. दीपमाणिक्यम्- वैशम्पायन प्रकाशन, प्रयागराज ।

२६. पिपासा- गङ्गानाथ झा केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रयागराज ।

२७. नाट्रय पञ्चामृतम्- अक्षयवट प्रकाशन, प्रयागराज ।

२८. आक्रन्दनम् - आंजनेय प्रकाशन, इलाहाबाद ।

२९.प्रेक्षणसप्तकम् - सागर विश्वविद्यालय प्रकाशन, सागर मध्य प्रदेश ।

३०. पुरन्ध्रीपञ्चकम् - केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ।

३१.कथाकौमुदी- हंसा प्रकाशन, जयपुर ।

३२. बुमुक्षा- पद्मजा प्रकाशन, प्रयागराज ।

३३.भारती- 'दम्ज्वरः'- डॉ. देवर्षि कलानाथ शास्त्री, जयपुर ।

३४.विविधा- महेश चन्द्र शर्मा 'गौतम' देववाणी परिषद प्रकाशन, आर-6, वाणीविहार, दिल्ली ।

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code):	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name)
MSNE – 513 A	संहिता एवं ब्राह्मणमीमांसा

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वैदिक संहिताओं के विशिष्ट प्रतिपाद्य विषय से अवगत कराना एवं ब्राह्मण ग्रंथों के वैशिष्ट्य से परिचित कराते हुए यज्ञोपयोगी मीमांसा दर्शन का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र ऋग्वेद संहिता शुक्ल यजुर्वेद संहिता ब्राह्मण ग्रन्थ में वर्णित वैदिक संस्कृति एवं परंपरा से परिचित हो सकेंगे, तथा अर्थसंग्रह में वर्णित द्रव्य, पदार्थ, ज्ञान, सामान्य एवं विशेष कर्म आदि का सम्यक अवबोधन करेंगे|

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

कुल व्याख्यान संख्या: 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	१. ऋग्वेदसंहिता- पूषनसूक्तम् (६.५३), सोमसूक्तम् (९.८०), पितृसूक्तम् (१०.१५)।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	शुक्लयजुर्वेद:- माध्यन्दिनसंहिता- द्वितीयोऽध्याय: कण्डिकात् १८ कण्डिकापर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्ग:	.अथर्ववेदसंहिता- शालानिर्माणसूक्तम् (३.१२), सर्पविषनाशनम् (५.१३), राष्ट्रसभा (७.१३)।	15	1
चतुर्थो वर्ग:	शतपथब्राह्मण: (प्रथमो काण्ड:)- प्रथमोऽध्याय:।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	अर्थसंग्रह:- आदितो विनियोगविधिपर्यन्तम् एवञ्च प्रयोगविधे: सामान्य-परिचय:।	15	1

संस्तुत-ग्रन्थाः

१. ऋग्वेदसंहिता -	पंडित राम गोविंद त्रिवेदी
२. ऋग्वेद -	डॉ गंगा सहाय शर्मा
३. ऋग्वेद संहिता यथार्थ अनुवाद	महेश चंद्र माहेश्वरी प्रसन्न चंद गौतम
४. अथर्ववेदसंहिता -	पंडित रामस्वरूप शर्मा गौड़
५. शतपथ ब्राह्मण –	डॉ. सुंदर नारायण झा
६. यजुर्वेद संहिता-	मूलमात्र चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान
७. यजुर्वेद संहिता-	पंडित ईश्वर चंद्र
८. यजुर्वेद संहिता -	महर्षि दयानंद सरस्वती
९. ऋग्वेद संहिता हिंदी भावार्थ सहित-	पंडित श्री राम शर्मा अचार्य
१०. अर्थसंग्रह-	श्री भास्कर
११. अर्थसंग्रह-	डॉ. कामेश्वर नाथ मिश्र
१२. अर्थसंग्रह –	डॉ. दयाशंकर शास्त्री

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 513 B	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : व्याकरणदर्शनम्

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

महाभाष्य, व्याकरण दर्शन की पृष्ठभूमि और व्याकरण शास्त्र के इतिहास की जानकारी प्रदान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र-

महाभाष्य के द्वितीय आह्निक में वर्णित माहेश्वर सूत्रों पर लिखे गए भाष्य एवं व्याकरण शास्त्र के इतिहास के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	व्याकरणशास्त्रस्येतिहासः।	15	1
द्वितीयो वर्गः	महाभाष्यम् (द्वितीयाह्निकम्) - आदितो 'ऐऔच्' पर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	महाभाष्यम् (द्वितीयाह्निकम्) - हयवरट् इत्यतः वर्णार्थवत्ताधिकरणपर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	'प्रत्याहारेऽनुबन्धानां कथमज्ग्रहणेषु न' 'इति' वार्तिकात् द्वितीयाह्निकसमाप्तिं यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	परमलघुमञ्जूषा- स्फोटनिरूपणम्	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास- (युधिष्ठिर मीमाँसक), रामनाथ त्रिपाठी शास्त्री, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी

२. नागेशभट्टेन प्रणीता परमलघुमञ्जूषा - पं. लोकमणि दाद्याल, चौखम्बा पब्लिशर्स, वाराणसी

३. संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास- आचार्य कपिलदेव द्विवेदी, चौखम्बा विद्या भवन, वाराणसी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 513 C	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) रूपकं छन्दांसि च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विभिन्न घटकों जैसे कथानक अभिनेता और नाटकीय आलोचना के रस से परिचित कराना है। इन पाठ्यक्रमों के दूसरे भाग में दो नाटक मृच्छकटिक और उत्तररामचरितम् के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जो छात्रों को कवियों के महत्वपूर्ण सैद्धांतिक योगदान से परिचित कराने के लिए है।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद छात्रों को विभिन्न शब्दावली यानी कथानक अभिनेता और रस आदि के बारे में गहन ज्ञान होगा। आलोचना के लिए एक नाटकीय रचनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	मृच्छकटिकम्- प्रथमाङ्कात् तृतीयाङ्कपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	मृच्छकटिकम्- चतुर्थाङ्कात् अन्तपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	उत्तररामचरितम्- तृतीयाङ्कः।	15	1
चतुर्थो वर्गः	मात्रिकछन्दांसि- आर्याप्रकरणम्- आर्यासामान्य-पथ्या-विपुला-चपला- मुखचपला-जघनचपलालक्षणानि च। अनुष्टुपप्रकरणम्- वक्र- पथ्यावक्र-विपुला-भविपुला-रविपुलाश्च।	15	1
पञ्चमो वर्गः	त्रिष्टुपप्रकरणम्- इन्द्रवज्रा-उपेन्द्रवज्रा-उपजाति-रथोद्धता-स्वागताश्च द्रुतविलम्बितम-भुजंगप्रयातम-प्रियंवदा-मणिमाला-स्रग्विणी-वसन्ततिलका-मालिनी-शिखरिणी-मन्दाक्रान्ता-शार्दूलविक्रीडितञ्च।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:

१. महाकवि शूद्रकप्रणीतं मृच्छकटिकम्-	आचार्य जगदीश चंद्र मिश्र
२. महाकवि शूद्रकप्रणीतं मृच्छकटिकम्-	आचार्य श्रीनिवास शास्त्री
३. महाकवि शूद्रकप्रणीतं मृच्छकटिकम्-	डॉ. जयशंकर लाल त्रिपाठी
४. भवभूति विरचितम् उत्तररामचरितम् -	प्रो. इन्द्र
५. भवभूति विरचितम् उत्तररामचरितम् -	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी।
६. The Uttarramcharitam of Bhavbhuti-.	M. R. Kale
७. Mricchakatikam of Sudraka-	R. D. Karnadhar

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 513 D	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : न्यायसूत्रयोगदर्शनञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को न्याय दर्शन की समृद्ध परंपरा से परिचित कराते हुए योग दर्शन के सिद्धांतों का ज्ञान प्रदान करना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र गौतम न्याय सूत्रों एवं पतंजलि योग दर्शन सूत्रों की व्याख्या कर सकेंगे तथा अष्टांग योग एवं प्राणायाम के अभ्यास कर सकेंगे |

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	गौतमन्यायसूत्रम् (प्रथमाह्निको) - प्रथमसूत्रात् ११ सूत्रपर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	गौतमन्यायसूत्रम् (प्रथमाह्निको) - १२ सूत्रात् २९ सूत्रपर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	गौतमन्यायसूत्रम् (प्रथमाह्निको) - ३० सूत्रात् अन्तिमसूत्रपर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	पतंजलियोगदर्शनम्- योगसूत्रम्- समाधिपादः- प्रथम सूत्रात्- २४ सूत्रं यावत्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	पतंजलियोगदर्शनम्- योगसूत्रम्- समाधिपादः- २५ सूत्रात्- अन्तिमं सूत्रं यावत् एवञ्च साधनपादः- प्रथमसूत्रात्- १५ सूत्रों यावत्।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१. गौतमन्यायसूत्रम्- (वात्स्यायन भाष्यसहितम् प्रथमोऽध्यायः) –

२. पतंजलियोगसूत्रम् (व्यासभाष्यसहितम्) समाधि एवञ्च साधनपादः।

३. महर्षिगौतमप्रणीतं न्यायदर्शनम् (वात्स्यायनभाष्यसहितम्)- आचार्य बुद्धिराज शास्त्री

४. न्याय दर्शन - आचार्य ढुण्ढिराज शास्त्री

५. प्राचीन भारतीय धर्म एवं दर्शन - डॉक्टर सहाय

६. भारतीय दर्शन में चेतना का स्वरूप - श्री प्रकाश पाण्डेय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 A	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) वेदाङ्गानुक्रमणी

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वेदांग, अनुक्रमणी साहित्य तथा मूल वैदिक छन्दों का ज्ञान कराना। वेद मे प्रयुक्त शब्दों की व्युत्पत्ति एवं निर्वचन का ज्ञान कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के पश्चात छात्र वैदिक छन्दों का ज्ञान, शब्दों की व्युत्पत्ति एवं निर्वचन का ज्ञान प्राप्त कर वैदिक मंत्रों का स्वरबद्ध गान कर सकेंगे और वैदिक परम्परा को संरक्षित कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्ग:	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्ग:	१. निरूक्तम् (प्रथमोऽध्याय:)- प्रथमत: तृतीयपादं यावत्।	15	1
द्वितीयो वर्ग:	निरूक्तम् (प्रथमोऽध्याय:)- प्रथमत: तृतीयपादं यावत्।	15	1
तृतीयो वर्ग:	निरूक्तम्- (द्वितीयोऽध्याय:)- प्रथमपाद:सम्पूणम्, एवञ्च सप्तमोऽध्याय: प्रथमपादतो तशचतुर्थपादं यावत्।	15	1
चतुर्थो वर्ग:	बृहद्देवता- (प्रथमोऽध्याय:)।	15	1
पञ्चमो वर्ग:	वैदिक- छन्दांसि - गायत्री-उष्णिक्-अनुष्ट्-त्रिष्टुप्, जगती-वृहती-पङ्क्तिश्च।	15	1

संस्तुतग्रन्थाः

१.निरुक्तम्-	(दुर्गाचार्य भाष्यसहितम्)
२. निरुक्त-	डॉ. उमाशंकर शर्मा ऋषि
३. निरुक्तम् -	डॉ. कपिल देव द्विवेदी
४. निघण्टु एवं निरुक्त -	लक्ष्मण स्वरूप
५. निरुक्त मीमांसा -	शिव नारायण शास्त्री
६. वैदिक व्याकरण-	डॉ. रामगोपाल वर्मा
7. वैदिक व्याकरण-	डॉ. उमेश चंद्र पाण्डेय

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 B	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : परिभाषालंकारमीमांसा

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को व्याकरण की शास्त्र परंपराओं का ज्ञान कराते हुए नागेशभट्ट की परिभाषाओं एवं श्रीमद् कौण्डभट्ट के लकारार्थ प्रक्रिया का सम्मान अवबोधन कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन के फलस्वरूप छात्र व्याकरण मीमांसा के विश्लेषणात्मक एवं समालोचात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	नागेशभट्टविरचितः परिभाषेन्दुशेखरः- (प्रथमतन्त्रम्)- प्रथमतः पञ्चमपरिभाषा- पर्यन्तम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	नागेशभट्टविरचिचिः परिभाषेन्दुशेखरः- (प्रथमतन्त्रम्)- षष्ठमतः दशम परिभाषापर्यन्तम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	नागेशभट्टविरचितः परिभाषेन्दुशेखरः- (प्रथमतन्त्रम्)- एकादशतः पञ्चदश परिभाषापर्यन्तम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	नागेशभट्टविरचितः परिभाषेन्दुशेखरः- (प्रथमतन्त्रम्)-षोडशतः विंशति- परिभाषापर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	वैयाकरणभूषणसारः- (धात्वर्थ) ५वीं कारिका पर्यंत। लकारार्थप्रकरणम्।	15	1

संस्तुत-ग्रन्था:-

१. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर:- सुबोधिनी हिन्दी व्याख्या सहित- आचार्य विश्वनाथ मिश्र

२. श्रीमद् कौण्डभट्टविरचित:- वैयाकरणभूषणसार:- पं. चन्द्रिका प्रसाद द्विवेदी

३. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर: - जयकृष्ण दास हरिदास गुप्त

४. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर: - तात्या शास्त्री

५. नागेशभट्टविरचित: परिभाषेन्दुशेखर: - श्री गोविंद शर्मा

६. वैयाकरणभूषणसार: - श्री प्रभाकर मिश्र

७. वैयाकरणभूषणसार: - पंडित नंदकिशोर शास्त्री

८. वैयाकरणभूषणसार: - श्री भीमसेन शास्त्री

९. वैयाकरणभूषणसार: - आचार्य देवदत्त शर्मा

१०. वैयाकरण भूषणसार दीपिका - श्री राम किशोर त्रिपाठी

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 C	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : काव्यमीमांसागद्यकाव्यञ्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को धन्यलोक के सिद्धांत एवं गद्य काव्य से परिचित कराना है। ध्वन्यालोक ध्वनि के विचार के बारे में बात करता है। कविता की अभिव्यक्ति पर सबसे महत्वपूर्ण तत्व होने के कारण ध्वनि के विचार या सुझाव की आवश्यकता होती है।

अधिगम (Learning / Outcome):

निर्धारित पाठ और उसमें मौजूद शर्तों को समझने और समझाने में सक्षम होंगे। इस ज्ञान को काव्य में विचारोत्तेजक अर्थ के आलोक में समालोचनात्मक विश्लेषण के लिए लागू करने में सफल होंगे। गद्य के भावों की सराहना और आनंद लेने में सक्षम होंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	ध्वन्यालोकः (प्रथमोद्योतः) प्रथमकारिकात् १२ कारिकापर्यन्तम्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	ध्वन्यालोकः (प्रथमोद्योतः) द्वादशकारिकात् त्रयोदशकारिकापर्यन्तम्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्। तथा च चतुर्थोद्योतः प्रथमकारिकातः पञ्चमकारिकापर्यन्तम्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	ध्वन्यालोकः - चतुर्थोद्योतः षष्ठमकारिकात् अन्तिमां कारिकां यावत्। मूलपाठस्य व्याख्यात्मकमध्ययनम्।	15	1
चतुर्थो वर्गः	हर्षचरितम् (प्रथमोच्वासः) आदितो 'अष्टादशवर्षदेशीयं युवानमद्राक्षीत्' पर्यन्तम्।	15	1
पञ्चमो वर्गः	हर्षचरितम्- प्रथमोच्वासः - 'पार्श्वे च तस्य' इत्यतः अन्तपर्यन्तम्।	15	1

संस्तुतग्रन्था:-

१.	आनन्दवर्धनविरचित: ध्वन्यालोक:-	आचार्य विश्वैश्वर
२.	आनन्दवर्धनविरचित: ध्वन्यालोक: -	डॉ. गंगासागर राय
३.	आनन्दवर्धनविरचित: ध्वन्यालोक: -	आचार्य लोकमणि दाहाल
४.	हर्षचरितम् -	आचार्य श्री मोहन देव पंत
५.	हर्षचरितम् -	पंडित श्री जगन्नाथ पाठक

पाठ्यक्रमसंख्या (Course Code): MSNE – 514 D	पाठ्यक्रमशीर्षक: (Course Name) : माण्डूक्यकारिकाशाङ्करवेदान्तश्च

पाठ्यक्रमोद्देश्यानि (Course Objectives):

छात्रों को वेदांत दर्शन के मूलभूत सिद्धांत से परिचित कराते हुए 'शङ्कराचार्य की दृष्टि में अद्वैत वेदांत' से परिचित कराना तथा माण्डूक्यकारिका के प्रकरणों एवं शाङ्करभाष्य के महत्व तथा अवदान का बोध कराना।

अधिगम (Learning / Outcome):

इस कोर्स के अध्ययन के फलस्वरुप छात्र वेदांत दर्शन के प्रतिपाद्य विषय अद्वैतवाद को समझ सकेंगे, तथा निराकार ब्रह्म का आत्मसाक्षात्कार कर सकेंगे।

क्रेडिट: 5	पूर्णांक: 75 + 25	उत्तीर्णांक: 33 प्रतिशत

आहत्यव्याख्यानसंख्या - 75

वर्गः	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
प्रथमो वर्गः	माण्डूक्यकारिका- प्रथमप्रकरणं सम्पूर्णम्।	15	1
द्वितीयो वर्गः	माण्डूक्यकारिका- चतुर्थ प्रकरणं सम्पूर्णम्।	15	1
तृतीयो वर्गः	ब्रह्मसूत्रम्- प्रथमसूत्रम् (शाङ्करभाष्यम्)।	15	1
चतुर्थो वर्गः	ब्रह्मसूत्रम्- द्वितीयततृतीयश्च सूत्रम् (शाङ्करवेदान्तम्)।	15	1
पञ्चमो वर्गः	. चतुःसूच्यां शाङ्करभाष्यस्य महत्वं योगदानश्च।	15	1

संस्तुत- ग्रन्था:-

१. माण्डूक्यकारिका-	स्वामी अखण्डानन्द सरस्वती
२. ब्रह्मसूत्रम्-	महर्षि: बादरायण:
३. ब्रह्मसूत्रम्-	हरिकृष्णदास गोयन्दका, गीता प्रेस गोरखपुर
४. गौड़पाद माण्डूक्यकारिका-	शंकराचार्य भाष्य सहित मूलमात्र
५. गौड़पादभाष्यकारिका -	शंकर भाष्य सहित आनंदगिरि टीका

Course Nature	Course Code	Credit
शोध परियोजना	MSNP - 515	4